प्रा. विभुते आर. वी.

जन्म : 5 अक्तूबर 1967 लातूर तहसील लातूर के किसान परिवार में (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम. ए., एम. फिल. (हिंदी साहित्य)

प्रकाशित :

1. संत साहित्य की प्रासंगिकता (प्रकाशित)
2. संत कबीर की प्रासंगिकता (प्रकाशित)
3. भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन (सह)

शोध आलेख : राष्ट्रीय स्तर 6 आलेख प्रकाशित

व्याख्याता : महामानव एवं संत साहित पर 100 से अधिक व्याख्यान

संप्रति : सह आचार्य (हिंदी विभाग) श्री किशनराव देशमुख महाविद्यालय, चाकूर जिला लातूर 1994 से

संपर्क : 'मृदगंध' 28 गणुकल अंबाजोगाई रोड, लातूर, पिन-413512

डॉ. रणजीत जाधव

जन्म : जून 1971, शिलवा, तहसिल : अहमदपुर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए.हिन्दी (1994) पी.एच.डी. (2003)

लेखन : 1) हिन्दी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन, 2) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, 3) हिंदी साहित्य विमर्श, 4) दक्षिण भारतीय संत परम्परा, 5) संत तुकाराम की हिंदी पदावली, 6) हिंदी भाषा विविध आयाम 7) भाषा, साहित्य और संस्कृति चिंतन

सम्पादन : 1) भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम, 2) संत साहित्य और वर्तमान जीवन, 3) हिंदी मराठी संत साहित्य में प्रगतिशील चेतना, 4) 'भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन', 5) डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे रचनावली, 6)साहित्य का समाज और हिंदी – मराठी साहित्य, 7) विलासराव विशेषांक, 8) हिंदी साहित्य में सांस्कृतिक मूल्य, 9) स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी मराठी कविता, 10) स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

शोध-निर्देशक : स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड की ओर से 8 शोध छात्रों को पी.एच.डी. घोषित

विशेष : 1) अध्यक्ष, संत कबीर प्रतिष्ठान,लातूर, 2) कार्यकारणी सदस्य, हिन्दी साहित्य परिषद,लातूर, 3) राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख वाचन तथा अतिथि के रूप में निमंत्रित, 4) हिन्दी की स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में 60 लेख प्रकाशित, 5) आकाशवाणी परभणी केन्द्र से कार्यक्रमों का प्रसारण, 6) संयोजक : कबीर प्रतिष्ठान, लातूर द्वारा आयोजित पांच संगोष्ठियों तथा प्रतिवर्ष 'कबीर व्याख्यानमाला' का आयोजन

पुरस्कार / सम्मान : 1) महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी,मुंबई का 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार 2017', 2) हिन्दी समर्पण सम्मान – 2018 (साहित्यकार संसद,इलाहाबाद) 3) 'साहित्य भूषण पुरस्कार-2011' (धर्मवीर बहुउद्देशिय सेवाभावी संस्था, लातूर)

संप्रति : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्व.ज्ञानदराव देशमुख महाविद्यालय, बाभलगांव ता.जि.लातूर (महाराष्ट्र)

संपर्क : 'शब्दांकुर', यमुना सोसायटी, पुराना औसा रोड, लातूर-413531 (महाराष्ट्र)

मो० : 9421374110 **ई-मेल :** jadhavranjit500@gmail.com

शैलजा प्रकाशन

57-पी, कुंज विहार-II, यशोदा नगर, कानपुर

Mob.: 9451022120 • E-mail: shailjaprakashan@gmail.com

ISBN : 978-81-954734-9-6

₹725/-

स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

संपादक :

प्रो. डॉ. रणजीत जाधव

सह संपादक :

प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

डॉ. दिलीप रामराव गुंजरगे

जन्म : 10.07.1977

शिक्षा : एम.ए. हिन्दी, एम.फिल. पी-एच.डी.

प्रकाशन :

- यशपाल के उपन्यासों का शैली वैज्ञानिक अध्ययन
- भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन
- हिंदी मराठी संत साहित्य में प्रगतिशील चेतना
- Intellectual Property Rights with Special Reference to Patents and Copyrights in India

शोध-पत्र : अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय तथा राज्यस्तरीय शोध-पत्र

पुरस्कार : जयक्रांती भूषण – 2009

अन्य कार्य : सचिव - ज्ञानदान शिक्षण प्रसारक मण्डल

सचिव - संत कबीर प्रतिष्ठान, लातूर

कार्यकारणी सदस्य – हिंदी साहित्य परिषद लातूर

सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग जयक्रांती कला व वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर, महाराष्ट्र

चलभाष : 9403246100

स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

संपादक :

प्रो. डॉ. रणजीत जाधव

सहसंपादक :

प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

शैलजा प्रकाशन

कानपुर

पुस्तक	:	स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य
संपादक	:	प्रो. डॉ. रणजीत जाधव, प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते
©	:	लेखक
प्रकाशक	:	**शैलजा प्रकाशन** प्रकाशक एवं वितरक 57 पी., कुंज विहार, II यशोदा नगर, कानपुर -11 Mob.: 8765061708, 9451022125 E-mail : shailjaprakashan@gmail.com
ISBN	:	978-81-954734-9-6
संस्करण	:	प्रथम 2022
मूल्य	:	₹ 725 /–
शब्द साज	:	शिखा ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	अनिका डिजिटल, कानपुर

Swadhinta Andolan Aur Bhartiya Sahity

by : Dr. Ranjit Jadhva

Price : Seven Hundred Twenty five Only.

प्रसिद्ध भाषाविद स्मृतिशेष

डॉ. अंबादासराव देशमुख जी

को

सादर समर्पित

अनुक्रमणिका

1. चित्त जेथाँय भीति शून्य 11
- डॉ. ठाकुरदास महेंद्र
2. उत्तर प्रदेश में हिन्दी पत्रकारिता और स्वाधीनता आंदोलन 19
- डॉ. वन्दना श्रीवास्तव
3. प्रसाद के नाट्य संवादों में राष्ट्रबोध 32
-डॉ. रघुनाथ पाण्डेय
4. हिंदी उपन्यास साहित्य में स्वाधीनता संग्राम 40
-प्रा. डॉ. पठाण आयुब खान जी
5. भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में प्रेमचंद के उपन्यासों का योगदान 46
-डॉ. काबले आशा दत्तात्रेय
6. स्वाधीनता आन्दोलन और मूक-हिंदी मराठी फिल्में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के विशेष सन्दर्भ में 53
-डॉ. विनोद कुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'
7. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा का योगदान 58
-डॉ. शिवकांता रामकिसन सुरकुटे
8. राष्ट्रीय आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता 64
- डॉ. पंडित बन्ने
9. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी सिनेमा 67
- प्रा. डॉ. मधुकर राऊत
10. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्में 71
प्र. डॉ. राम दगडू खलेंग्रे
11. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका 79
डॉ. नवनाथ गाडेकर
12. स्वाधीनता आन्दोलन और देश विभाजन की कहानियाँ 83
-प्रा. प्रकाश बन्सीधर खुळे
13. स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ 88
-श्री कुपेन्द्र राठोड़
14. हिंदी उपन्यासों में स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण 93
-डॉ. रेविता बलभीम कावळे
15. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य : एक परिदृश्य 97
डॉ. नानासाहेब शं. गायकवाड 'संगीत'

6

स्वाधीनता आन्दोलन और मूक-हिंदी-मराठी फ़िल्में : राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'नेवार्थ'

स्वाधीनता आन्दोलन के युग में फिल्मों के महत्व को स्वीकार करते हुए डॉ. राममनोहर लोहिया ने कहा था कि – "भारत को एक करने वाली दो ही शक्तियाँ हैं, पहले गाँधी और दूसरी फिल्में।"[१]

सन १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के उपरांत भारतवर्ष को आजादी पाने में प्राय: ९० वर्षों का समय लगा| कलकत्ता, मुंबई और मद्रास के विश्वविद्यालय, पंजाब के राष्ट्रीय महाविद्यालय, दयानंद एंग्लो महाविद्यालय और कांगड़ी-हरिद्वार के गुरुकुलों से शिक्षा प्राप्त युवाओं के हृदयों में राष्ट्रवाद का बीज समय पाकर वटवृक्ष के रूप में लहलहा रहा था|

इन परिस्थितियों में भारत की सभी भाषाओं के साहित्यकार कभी प्रत्यक्ष रूप में तो कभी परोक्ष रूप में ब्रिटिश शासन के विरोध में जमकर लिख रहे थे| पत्रकार अपने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आग उगल रहे थे| धार्मिक कीर्तनकार भी अपनी वाणी से जनसामान्य में देशभक्ति की भावना के अंगारों को सुलगा रहे थे| राजनैतिक दृष्टी से जब लाल, बाल और पाल तिकड़ी की तूती बज रही थी|

ऐसे में एक नये माध्यम का आरम्भ हो चुका था जिसे हम फिल्म, सिनेमा, चलचित्र या चित्रपट कहते हैं|'किसी भी देश का इतिहास, सांस्कृतिक चेतना, पर्व-उत्सव, मेले-प्रदर्शनियाँ, रीति-रिवाज आदि सिनेमा में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त होता है। यह राष्ट्रीय एकता और विश्व बंधुत्व की भावना का भी पोषण करता है। किसी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परंपरा का परिचय प्राप्त करने के लिए जिन साधनों का सहारा लिया जाता है। उनमें नाट्यकला और सिनेमा का विशिष्ट स्थान है।"[२]

'महात्मा'/ 'राष्ट्रपिता' मोहनदास करमचंद गाँधी जी का जन्म सन २ अक्तूबर १८६९ के दिन हुआ था| फिल्म का आविष्कार उनकी युवावस्था के समय हुआ था| सन १८८८ में फ्रेंच आविष्कारक लुईस ले प्रिन्स ने २.११ सेकेण्ड के पहली मूक फिल्म बनाई थी| सन १९१३ में दादासाहेब फाल्के जी ने ४० मिनट की भारत की पहली मूक फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' बनाई| ठीक इसी काल में गाँधी जी दक्षिण अफ्रिका के सफल

सत्याग्रह से भारत लौटे| फिल्मों का आरम्भ और गाँधी जी का आगमन भारत के स्वाधीनता संग्राम में ऐतिहासिक घटनाएँ सिद्ध हुई| राजा हरिश्चंद्र नामक मूक फिल्म गाँधी जी ने न देखी सही पर बचपन में सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र की कथा तो अवश्य सूनी थी और नाटक भी देखा था| महात्मा गाँधी जी ने अपने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जीवनमूल्य 'सत्य' और आगे चलकर 'सत्याग्रह' को आचरण में उतारा था|

महात्मा गाँधी जी ने सन १९१७ में किसानों के लिए जमींदारों के विरोध में 'चंपारण सत्याग्रह आन्दोलन' का नेतृत्व किया| सन १९१८ में सूखाग्रस्त किसानों के कर मुक्ति के लिए 'खेडा सत्याग्रह आन्दोलन' का नेतृत्व किया| सन १९१८ में ही महात्मा गाँधी जी ने 'अहमदाबाद मिल मजदूर आन्दोलन' का नेतृत्व किया| गाँधी जी की लोकप्रियता दिन-दूनी-रात-चौगुनी मात्रा में बढ़ रही थी|

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सिनेमा की किसी भी तरह की भूमिका को रोकने के उद्देश्य से प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही यानी ५ मार्च १९१८ के दिन अंग्रेजों ने 'इंडियन सिनेमेटोग्राफी एक्ट' लागू किया। इसके अंतर्गत सार्वजनिक प्रदर्शन से पहले किसी भी फिल्म को सेन्सर बोर्ड से प्रमाण पत्र लेना आवश्यक था। इस एक्ट का संबंध देश की राजनीतिक चेतना से था, न कि सांस्कृतिक चेतना से। सेन्सर बोर्ड को यह लगता कि अमुक फिल्म से स्वतंत्रता का संदेश फैलने की संभावना है, वह फिल्म सेंसर की कैंची का शिकार हो जाती थी।

सन १९१८ में प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो चुका था| सन १९१९ में जलियाँवाला बाग़ का हत्याकांड हुआ था|सन १९२० में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की मृत्यु के बादकांग्रेस और भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की बागडोर महात्मा गाँधी जी की हाथों में आ गयी| सन १९१९ में गाँधी जी ने 'खिलाफत आन्दोलन' का समर्थन किया| महात्मा गाँधी जी ने अपने सत्याग्रह और अहिंसात्मक आन्दोलन से ब्रिटिश राज की जड़ें हिला दी थीं और अंग्रेज गाँधी जी को अपना दुश्मन मान चुकी थी| उनपर कड़े प्रतिबन्ध लगा रही थी| १९२० से १९२२ तक गाँधी जी का 'असहयोग आन्दोलन' चला| जिसमें हरिजन उद्धार, महिला उद्धार और हिन्दू-मुस्लिम एकता का बहुत बड़ा प्रयास भी किया गया|

भारत में १९१३ से १९३० तक लगभग १३०० फिल्मों का निर्माण हुआ। इनमें अधिकतर फिल्मों की कथाओं का आधार भारतीय जीवन में रचे-बसे ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों के जीवन और उनसे जुड़ी घटनाएँ ही थीं। 'लंका दहन' (१९१७), 'कालिया मर्दन' (१९१९), 'नल दमयंती' (१९२०), 'शकुंतला' (१९२०), भक्त विदुर (१९२१), 'वीर अभिमन्यु' (१९२२), 'सावित्री' (१९२३)जैसी फिल्में बनीं। ये सभी फिल्में भारत के स्वर्णिम इतिहास का चित्रण कर आम जनता को देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए प्रेरित कर रही थीं।

१९२१ में बनी मूक फ़िल्म 'भक्त विदुर' के केन्द्रीय पात्र 'विदुर' के चरित्र में महात्मा गाँधी जी के जीवनमूल्यों और आचरण की झलक मिलती है। इस फ़िल्म में द्वारका दास संपत ने विदुर की भूमिका निभाई थी। वे दुबले-पतले और लम्बे कद के थे। फ़िल्म में उन्होंने धोती पहनी थी और उनके हाथ में एक लाठी रहती थी। सेंसर बोर्ड ने भक्त विदुर को महात्मा गांधी की छाया मानकर उस फिल्म पर प्रतिबंध लगा दिया।

कुछ इसी तरह का वाकिया 'वन्दे मातरम' फ़िल्म के साथ भी हुआ। ब्रिटिशों के अनुसार 'वन्दे मातरम' शब्द देशभक्ति की भावना जगाने वाला शब्द था। इसलिए सेंसर बोर्ड के दबाव में इस फ़िल्म के शीर्षक में 'आश्रम' शब्द डाला गया। चित्रपति वी. शांताराम की फ़िल्म 'स्वराज तोरण' स्वाधीनता आंदोलन की चेतना का प्रसार करने वाली थी। सेंसर बोर्ड ने इस फिल्म के उस दृश्य को हटा दिया जिसमें शिवाजी के सैनिक शत्रुओं से अपने किले को स्वतंत्र कर उस पर भगवा ध्वज फहराते हैं। यह फ़िल्म बाद में 'उदय काल' के नाम से प्रदर्शित हुई।

'नूरजहाँ' (१९२३), 'रजिया बेगम' (१९२४), 'मुमताज महल' (१९२६), 'पन्ना-रत्ना (१९२६), 'अनारकली' (१९२८), 'सम्राट अशोक' (१९२८) आदि फिल्मों ने स्त्रियों के बीच स्वाधीनता आन्दोलन की चेतना का प्रचार-प्रसार किया। ये फिल्में भारत के गौरवशाली इतिहास को अभिव्यक्त कर रही थीं।

अमृतलाल नागर ने लिखा है कि "देश की जनता ने चाहे स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले का समय हो या उसके बाद का समय, हमेशा हिन्दी सिनेमा में अपनी रुचि दिखाई है क्योंकि हिन्दी सिनेमा ने उनके अन्तःकरण को जागृत करके उन्हें सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कुरीतियों से लड़ने एवं उन्हें दूर करने के योग्य बनाया।"[३]

आगे चलकर महात्मा गाँधी जी ने १९३० में नमक के क़ानून के विरोध में दांडी कूच का और आगे चलाकर 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' ला नेतृत्व किया। १९३१ में भारत की पहली सवाक फिल्म आलमआरा प्रदर्शित हुई।२३ मार्च १९३१ के दिन भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी की सज़ा दी गयी। देश की जनता गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता के संकल्प को पूरा करने के उद्देश्य से तैयार हो गई थी। इस समय हिन्दी सिनेमा ने जनता की भावनाओं को पर्याप्त अभिव्यक्ति दी। हिन्दी सिनेमा की दूसरी सवाक फ़िल्म 'जागरण' थी। यह फिल्म स्वतंत्रता आंदोलन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी थी जिसके कारण इसे सेंसर बोर्ड के कोप का सामना करना पड़ा। सेंसर बोर्ड को फ़िल्म के नाम पर आपत्ति थी।

१९३५ में एक फिल्म बनी थी 'धुप छाँव' जिसके गीत हिंदी के सुप्रसिद्ध कहानीकार पं. सुदर्शन जी ने लिखे थे। परोक्ष रूप से ब्रिटिशों को चोर कहने का साहस पं. सुदर्शन ने दिखाया था। "तेरी गठरी में लागा चोर मुसाफिर जाग ज़रा। "[४]

चित्रपति वी. शांताराम ने जब 'महात्मा' शीर्षक से महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत एकनाथ (अभिनेता बालगंधर्व) के जीवन पर फ़िल्म बनाई तो सेंसर बोर्ड ने इसका नाम बदलने को बाध्य कर दिया। इस फ़िल्म के मुख्य पात्र की कार्यविधि और कार्यक्रम महात्मा गांधी से मिलते-जुलते थे। बाद में यह फ़िल्म 'धर्मात्मा' (१९३५) नाम से प्रदर्शित हुई थी।इसमें पं. नरोत्तम व्यास जी रचित एक गाना था – "यदि चाह भारत बन जाए स्वर्ग सुखों का"[५]

१९४२ में महात्मा गाँधी जी ने 'भारत छोडो' अथवा 'चले जाओ' आन्दोलन का नेतृत्व किया| १९४२ में फिल्म प्रदर्शित हुई थी –'अपना घर' जिसमें पं. नरोत्तम व्यास जी ने रचा एक गीत था –"मेट गुलामी लें आज़ादी, झंडा ऊँचा कर, देश का झंडा ऊँचा कर'|[६]

ज्ञान मुखर्जी ने १९४३ में अशोककुमार-मुमताज शांति अभिनीत 'किस्मत' फिल्म बनाई। इसी फ़िल्म में 'आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है| दूर हटो ऐ दुनिया वालों हिन्दुस्तान हमारा है|"[७] शीर्षक गाना था। गीतकार रामचन्द्र नारायण जी द्विवेदी उर्फ कवि प्रदीप के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था।पर प्रदीप जी ने बड़ी चालाकी से 'तुम न किसी के आगे झुकना, जर्मन हो या जापानी|" का हवाला देकर वे ब्रिटिशों के पक्ष के ही हैं, यह सिद्ध किया|[८]

१९४३ में ही विजय भट्ट जी की एक महान फ़िल्म आयी थी – 'रामराज्य'! महात्मा गाँधी जी ने देखी हुई यह एकमात्र फिल्म है| इस फ़िल्म के श्री. लक्ष्मणाचार्य जी रचित गाने में थोड़ा बदलाव कर महात्मा गाँधी जी ने अपना प्रिय भजन ही बना लिया - "रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम|"[९]

१९४७-४८ में भारत विभाजन और पाकिस्तान निर्माण के बाद महात्मा गाँधी जी को नौआखाली में हिन्दू-मुस्लिमों के दंगों का शमन करना पड़ा और इसी कारण एक पागल ने उनकी हत्या कर डाली| २६ मार्च १९४८ के दिन दिलीपकुमार-कामिनी कौशल अभिनीत फिल्म 'शहीद' प्रदर्शित हुई| इसका एक गाना बहुत प्रसिद्ध हुआ – "वतन की राह में वतन के नौजवाँ शहीद हो"[१०] इस फिल्म का नायक राम सशस्त्र क्रांतिकारी बनता है और ब्रिटिशों की न्याय व्यवस्था उसे फाँसी की सज़ा देती है|

अंत में इतना ही कहना चाहूँगा कि आज़ादी के इस अमृत महोत्सव पर महात्मा गाँधी जी, सभी स्वाधीनता सेनानी और उनके विचारों पर मूक-हिंदी-मराठी फ़िल्में बनानेवालों फिल्मकारों को कोटि कोटि नमन !!!!

सन्दर्भ :-

१. ओंकार शरद, लोहिया: एक जीवनी, पृ. १२
२. अमृत लाल नागर, संकलन एवं संपादन, डॉ शरद नागर, फ़िल्म क्षेत्र, पृ. ३९
३. अमृतलाल नागर, संकलन एवं संपादन, डॉ. शरद नागर, फ़िल्म क्षेत्र, पृ. ४९
४. आज़ादी से पहले फ़िल्मी गीत और गीतकार – कन्तिमोहन सोज़, पृ. २२

५. विकिपीडिया 'धर्मात्मा'
६. आज़ादी से पहले फ़िल्मी गीत और गीतकार – कन्तिमोहन सोज़, पृ. ४४
७. फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत – सं. सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, पृ. २२
८. आज़ादी से पहले फ़िल्मी गीत और गीतकार – कन्तिमोहन सोज़, पृ. १८८
९. विकिपीडिया 'रघुपति राघव राजाराम'
१०. फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत –सं.सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, पृ. १४४

अध्यक्ष, हिंदी विभाग शोध निर्देशक एवं निमंत्रित सदस्य
हिंदी विभाग उस्मानाबाद
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय
औरंगाबाद
चलभाष – 9270000721/ 93253334065
ई-मेल – vvvinvay3@gmail.com

•